पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.05.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-24 ज्येष्ठ-2083 दयानन्दाब्द 202 16 मई से 31 मई 2026 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.05.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

मातृ पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, देश भक्त चरित्रवान युवाओं का निर्माण करेंगे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बैठक को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य व उनके साथ संतोष शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, जीवन लाल आर्य, ओम सपरा, गोपाल आर्य व महामन्त्री महेन्द्र भाई।

रविवार 3 मई 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आर्य समाज अशोक विहार फेज–1, दिल्ली के सभागार में राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निश्चय हुआ कि आगामी ग्रीष्मावकाश में युवा पीढ़ी को मातृ–पितृ भक्त, ईश्वर भक्त व देश भक्त निर्माण करने का अभियान चलाया जाएगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान, संस्कारित, सुसंस्कारित युवा ही देश के स्वर्णिम भविष्य है। आज वृद्धाश्रम खुल रहे हैं यह चिंता का प्रश्न है कि नई पीढ़ी में माँ बाप की सेवा भावना में कमी आयी है। विशाल आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर 30 मई शनिवार से 6 जून 2026 तक एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर–44, नोएडा में आयोजित किया जाएगा। शिविर में 12 वर्ष से 18 वर्ष तक के 200 युवक लिए जायेंगे उन्हें योगासन, दंड बैठक, लाठी, जुडो कराटे, बॉक्सिंग व आत्म रक्षा प्रशिक्षण दिया जायेगा व वैदिक संस्कृति की जानकारी दी जायेगी। शिक्षाविद डा. अमिता चौहान वा डॉ. अशोक कुमार चौहान के सानिध्य में यह शिविर चलेगा। इसके साथ ही देश के विभिन्न स्थानों पर भी शिविर लगेंगे। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि गाजियाबाद से 50 युवक सम्मिलित होंगे व हर सम्भव सहयोग प्रदान किया जाएगा। बैठक का कुशल संचालन राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई ने करते हुए सबसे सहयोग की अपील की। राष्ट्रीय संघटन मन्त्री सौरभ गुप्ता गाजियाबाद ने बताया कि परिषद को कार्य करते हुए 48 वर्ष होने जा रहे हैं। बैठक में सुरेश आर्य, त्रिलोक आर्य, यज्ञवीर चौहान, ओम सपरा, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, अरूण आर्य, अशोक जागिड़, योगेन्द्र शास्त्री, गोपाल आर्य, संतोष शास्त्री, जीवन लाल आर्य, सतीश शास्त्री, राधा कांत शास्त्री, मोहित आर्य, जय आर्य आदि ने सुझाव विचार व्यक्त किए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की कर्मठ टीम के सदस्य

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

युवा उद्घोष के 42 वर्ष पूरे होने पर सबको बधाई।

वैदिक धर्म के पुनरुद्धार में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का योगदान

— मनमोहन कुमार आर्य

भारतीय धर्म व संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, आदिकालीन, सर्वोत्कृष्ट, ईश्वरीय ज्ञान वेद और सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों पर आधारित है। सारे विश्व में यही संस्कृति महाभारत काल व उसकी कई शताब्दियों बाद तक भी प्रवृत्त रहने सहित सर्वत्र फलती–फूलती रही है। इस संस्कृति की विशेषता का प्रमुख कारण यह था कि यह ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित होने के साथ वेदों के प्रचारक व रक्षक ईश्वर के साक्षात्कृत धर्मा हमारे ऋषि मुनियों द्वारा प्रचारित व संरक्षित थी। महाभारत के विनाशकारी युद्ध के प्रभाव से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई जिससे संसार में धर्म व संस्कृति सहित शिक्षा के क्षेत्र में घोर अन्धकार छा गया। इस विषम परिस्थिति में देश–देशान्तर में वही हुआ जैसा कि नेत्रान्ध व अल्प नेत्र ज्योति वाले अशिक्षित व्यक्तियों के कार्य होते हैं। यह अन्धकार समाप्त नहीं हो रहा था अपितु समय के साथ बढ़ रहा था। इस स्थिति में हम देखते हैं कि देश–देशान्तर में कुछ महापुरुषों का जन्म हुआ जिन्होंने समाज को नई दिशा देने के लिए सामयिक ज्ञान की अपनी योग्यतानुसार अपने–अपने मत व धर्म प्रचलित किये और इन्हीं मत व धर्मों के पालन के लिए उन–उन देशों में, मुख्यतः यूरोप व अरब आदि देशों में, वहां की भौगोलिक एवं समाज के पुरुषों की योग्यता के अनुसार मत व संस्कृति का प्रादुर्भाव व विकास हुआ। भारत तथा विश्व में सृष्टि के आदि काल से लेकर महाभारत काल तक वैदिक धर्म व संस्कृति प्रचलित रही थी। समाज में अज्ञान बढ़ जाने से इसका विपरीत प्रभाव धर्म व संस्कृति दोनों पर हुआ जिस कारण संस्कृति का स्वरुप भी सत्य के विपरीत अज्ञान प्रधान होकर अनेक विकारों से युक्त हुआ।

संस्कृति का अध्ययन करने के लिए हमें धर्म, भाषा, स्वदेश गौरव की भावना, वेषभूषा, परम्परा वा रीति–रिवाजों आदि की स्थिति पर विचार और इसमें महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान की चर्चा करना उपयुक्त होगा। धर्म के क्षेत्र में भारत सृष्टि के आदि काल से वेद और वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का पालक रहा है। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण सत्य मान्यताओं, यथार्थ धर्म व संस्कृति के पोषक रहे हैं। हमारे ऋषि–मुनि भी विचार, चिन्तन, ध्यान व मनन द्वारा वेदों के सभी मन्त्रों व शब्दों में निहित मनुष्यों के लिए कल्याणकारी अर्थों व ज्ञान से देश की जनता को उपकृत करते थे जिससे सारा समाज व देश सत्य ज्ञान से युक्त व उन्नत था। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से सभी मनुष्यों व वर्णों की सन्तानों को गुरुकुलीय शिक्षा दी जाती थी जहां निर्धन व धनवानों के लिए वेद–वेदांगों के ज्ञान कराने वाली शिक्षा का सबके लिए समान रूप से निःशुल्क प्रबन्ध था। स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा को अनिवार्य करने की बात कही है। कृष्ण व सुदामा एक साथ पढ़ते थे और परस्पर मित्रवत् व्यवहार करते थे। वैदिक काल के सभी आचार्य व गुरु भी वैदिक ज्ञान के प्रबुद्ध विद्वान होते थे जिनके आचार्यत्व में विद्यार्थियों से नास्तिकता का नाश होकर एक सच्चे सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता ईश्वर की उपासना देश देशान्तर में प्रचलित थी। सभी स्त्री व पुरुष स्वाध्यायशील व योगाभ्यासी होते थे जिससे सभी स्वस्थ, सुखी, अपरिग्रही व सन्तोषी होते थे। समाज व देश में ऋषि–मुनियों की बड़ी संख्या होने से कहीं कोई अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न व प्रचलित नहीं होता था। शंका होने पर राजाओं के द्वारा बड़े–बड़े शास्त्रार्थों का आयोजन होता था और विजयी पक्ष के विचारों को समस्त देश को स्वीकार करना पड़ता था। धर्मनिरपेक्षता जैसा शब्द महाभारत काल तक व उसके बाद के साहित्य में कहीं नहीं पाया जाता। इस प्रकार सर्वत्र वैदिक धर्म का पालन होता था।

महाभारत काल के बाद मध्यकाल में अज्ञान व अन्धविश्वासों के उत्पन्न हो जाने से धर्म का सत्य स्वरूप विकृत हो गया जिससे समाज में अवतारवाद, मूर्तिपजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, पाखण्ड व आडम्बर, जन्मना जातिवाद आदि मिथ्या विश्वास उत्पन्न हो गये। महर्षि दयानन्द (1825–1883) तक इन मिथ्या विश्वासों में वृद्धि होती रही। स्वामी दयानन्द जी को सन् 1938 की शिवरात्रि को ईश्वर विषयक बोध प्राप्त हुआ। इसके कुछ काल बाद उनसे छोटी बहिन व चाचा की मृत्यु ने उनमें वैराग्य के संस्कारों को उत्पन्न किया। उन्होंने सत्य धर्म व संस्कृति की खोज के लिए सन् 1846 में माता–पिता व स्वगृह का त्याग कर देश भर के धार्मिक विद्वानों, शिक्षकों व योगियों को ढूंढ कर उनकी संगति व शिष्यत्व प्राप्त किया। मथुरा के प्रज्ञाचक्षु गुरू स्वामी विरजानंद सरस्वती के पास वह सन् 1860 में पहुंचे और उनसे तीन वर्षों में संस्कृत के आर्ष व्याकरण अष्टाध्यायी–महाभाष्य व निरुक्त संस्कृत–व्याकरण प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर समस्त वैदिक व इतर धार्मिक साहित्य के विद्वान बने। गुरु की प्रेरणा से उन्होंने संसार से मिथ्या ज्ञान नष्ट करने के साथ आर्ष ज्ञान व सत्य सनातन वैदिक मत एवं संस्कृति के प्रचार व स्थापना का कार्य किया। इस कार्य को सम्पादित करने के लिए ही उन्होंने देश का भ्रमण कर न केवल धर्मोपदेश व शास्त्रार्थ आदि ही किये अपितु आर्यसमाज की स्थापना सहित पंचमहायाविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया और साथ हि चारों वेदों का संस्कृत व हिन्दी में भाष्य का अभूतपूर्व महनीय कार्य भी आरम्भ किया। वह यजुर्वेद का पूर्ण व ऋग्वेद का आंशिक भाष्य ही कर पाये। उनके इन कार्यों ने धर्म व संस्कृति के सुधार व उन्नति का अपूर्व कार्य किया। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिख कर व उसमें देश देशान्तर के प्रायः सभी मतों की समीक्षा कर वैदिक सनातन मत को वास्तविक व यथार्थ धर्म सिद्ध व घोषित किया। उनकी चुनौती उनके जीवनकाल व बाद में भी कोई स्वीकार नहीं कर सका जिस कारण से आज भी वेद धर्म सर्वोपरि महान व संसार के सभी लोगों के लिए आचरणीय बन गया है। महर्षि दयानन्द के समय व उनसे पूर्व ईसाई व इस्लाम के अनुयायी हिन्दुओं के धर्म–परिवर्तन का आन्दोलन चलाये हुए थे। बहुत बड़ी संख्या में उन्होंने सफलता भी प्राप्त की थी परन्तु स्वामी दयानन्द के कार्यों ने उनके धर्मान्तरण के कार्य पर प्रायः पूर्ण विराम लगा दिया। यदि हिन्दुओं ने ऋषि दयानन्द की वेद विषयक सत्य विचारधारा को अपना लिया होता तो आज देश का इतिहास कुछ नया व भिन्न होता। पतन को प्राप्त हो रहे वैदिक धर्म की रक्षा के लिए उनके द्वारा किया गया कार्य अपूर्व, ऐतिहासिक एवं महान है।

महर्षि दयानन्द ने स्वभाषा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह वेदों की संस्कृत को विश्व की सभी भाषाओं की जननी मानते थे और उन्होंने साधिकार संस्कृत भाषा व इसके साहित्य का प्रचार किया। इसके लिए उन्होंने वेदांग प्रकाश नाम से संस्कृत व्याकरण के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं। गुजराती होते हुए भी उन्होंने गुजराती के प्रति कभी पक्षपात नहीं किया। वह प्रचार आरम्भ करने के समय से ही संस्कृत में व्याख्यान देते थे जो सरल सुबोध व मुहावरेदार होती थी जिसे संस्कृत न जानने वाले लोग भी समझ लेते थे। उनके वार्तालाप की भाषा भी यही भाषा थी। कालान्तर में उन्होंने हिन्दी भाषा को अपनाया और इसे आर्यभाषा का नाम दिया। बहुत कम समय में आपने हिन्दी सीख ली और हिन्दी में ही व्याख्यान, वार्तालाप व लेखन कार्य करने लगे। हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए आपने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखे व प्रकाशित किये। आपने अपने ग्रन्थों का उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद करने की अनुमति इस कारण नहीं दी थी कि इससे हिन्दी के प्रचार व प्रसार पर विपरीत प्रभाव हो सकता था। इस सन्दर्भ में उन्होंने यहां तक कह दिया था कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर और यहां का अन्न आदि खा कर यहां की सरल भाषा हिन्दी को नहीं सीख सकता उससे देश के हित के लिए और क्या आशा की जा सकती है? भारत के सरकारी दफ्तरों में कामकाज की भाषा तय करने के लिए अंग्रेजों ने जब एक कमीशन बनाया तो हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा स्वीकार कराने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने देश भर में एक हस्ताक्षर अभियान चलाया और उस पर लाखों वा करोड़ो लोगों के हस्ताक्षर कराये। हस्ताक्षर अभियान चलाकर सरकार से अपनी बात स्वीकार कराने वाले शायद स्वामी दयानन्द भारत के प्रथम महापुरुष थे। ऐसा ही अभियान उन्होंने गोरक्षा अथवा गोहत्या बन्द कराने के लिए भी चलाया था। महर्षि दयानन्द के कार्यों से देश में हिन्दी भाषा का अपूर्व प्रचार हुआ जिसका प्रभाव उनके समकालीन व परवर्ती संस्कृत व हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा। इस विषय पर शोधार्थियों ने शोध प्रबन्ध भी प्रस्तुत किये हैं। स्वभाषा संस्कृत व हिन्दी के प्रचार व प्रसार में स्वामी दयानंद जी का सर्वाधिक योगदान है।

मनुष्यों की वेशभूषा भी किसी संस्कृति का एक आवश्यक अंग होती है। भारत में प्राचीनकाल से ही पुरुषों व स्त्रियों की वेश भूषा निर्धारित है। पुरुषों के लिए धोती, कुर्ता, लोई वा शाल सहित बन्द गले का कोट व जैकेट एवं सिर पर पगड़ी प्रचलित रही है। इसी प्रकार से स्त्रियों के लिए भी बचपन में फ्राक से आरम्भ कर किशोर, युवावस्था व उसके बाद शलवार, कुर्ता, चुन्नी वा दुपट्टा, साड़ी आदि का पहनावा प्रचलन में रहा है। भौगोलिक दूरियों के कारण इनमें कुछ न्यूनाधिक परिवर्तन आदि भी देखने को मिलता है जिसमें एक ही मूल भावना काम करती दिखाई देती है। वेशभूषा विषयक भारतीय चिन्तन फैशन न होकर शरीर की रक्षा व सभ्यता का सूचक होता है जिससे किसी के मन में किसी प्रकार विकार आदि उत्पन्न न हो। 8वीं शताब्दी से भारत में मुगलों का आना आरम्भ हुआ और उन्होंने अपने धर्म, भाषा व वेशभूषा आदि थोपने में कोई कसर नहीं रखी। उसके बाद अंग्रेज आये और देश को गुलाम बनाया। उन्होंने भी अपने ईसाई धर्म, अंग्रेजी भाषा व परम्पराओं का प्रचार व प्रसार किया। हमारे देश के लोग अंग्रेजों से कुछ अधिक ही प्रभावित हो गये और आज भी इनकी ही वेश भूषा का प्रचलन देश भर में देखने को मिलता है। भारतीय वेशभूषा का प्रचलन कम हो रहा है और विदेशी यूरोपीय वेशभूषा का प्रचलन बढ़ रहा है।

महर्षि दयानन्द ने भारतीय धर्म, संस्कृति के प्रति गौरव का भाव जगाया तो इसमें भारतीय वेशभूषा पर भी ध्यान केन्द्रित रखा। वह सदैव धोती का प्रयोग करते थे। भारतीय कुर्ते में भी उनके चित्र उपलब्ध है। सम्मान की निशानी सिर पर पगड़ी का भी वह प्रयोग करते थे और यदि ऊपर का उनका भाग वस्त्रहीन है, तो वह प्रायः शाल या लोई ओढ़ते थे। उनके जीवन में प्रसंग आता है कि एक बार उनकाएक अनुयायी अपने पुत्र को उनके पास लाया और उसके सुधार के लिए

(शेष पृष्ठ 3 पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में

विशाल आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर

रविवार 7 जून से रविवार 14 जून 2026 तक
स्थानः आर्य समाज जानी पुर कॉलोनी जम्मू
इच्छुक युवक सम्पर्क करे– 7051094311

सुभाष बब्बर	कपिल बब्बर	अमित महाजन
प्रान्तीय अध्यक्ष	संयोजक	महामन्त्री

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जिला फरीदाबाद के तत्वावधान में

विशाल आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 31 मई से रविवार 7 जून 2026 तक
स्थानः न्यू जान एफ डी स्कूल पल्ला फरीदाबाद

विद्याभूषण आर्य	अशोक शास्त्री	वीरेन्द्र योगाचार्य	जितेन्द्रसिंह आर्य
जिला अध्यक्ष	जिला मन्त्री	शिविर संयोजक	स्वागताध्यक्ष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जिला करनाल के तत्वावधान में

विशाल आर्य युवती चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 26 मई से 30 मई 2026 तक
स्थानः डी.ए.वी पुलिस पब्लिक स्कूल कैथल रोड करनाल

स्वतन्त्र कुकरेजा	अजय आर्य	हरेन्द्र मोहन चौधरी	रोशन आर्य	सविता कौशिक
प्रदेश अध्यक्ष	जिला अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष

सा.आ.वी. दल का शिविर नोएडा में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2026 इस बार नोएडा में दिनांक 7 जून से 14 जून 2026 तक एमिटी इन्टर नैशनल स्कूल, सैक्टर–44, नोएडा–44, उत्तर प्रदेश में आयोजित किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के लिए 13 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनाएं दिनांक 26 मई 2026 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति, प्रधान संचालिका (9672286863),
मुदुला चौहान, संचालिका (9810702760),
आरती खुराना, सचिव (9910234595),
नीरज कुमारी, कोषाध्यक्ष (8920208536)

ऋषि लंगर के लिए अपील

आपको विदित ही की 200 युवकों का विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर 30 मई से 6 जून तक एमिटी कैम्पस सेक्टर 44 नोएडा में आयोजित किया जा रहा है

आपसे विनम्र अनुरोध है कि आठ दिन तीन समय की व्यवस्था में सहभागी बने , जैसे

आप 10kg आटा या 10kg चावल, 10kg दाल या 10kg चीनी अथवा 1kg घी या रिफाइंड अथवा फल सब्जी आदि छोटी छोटी आहुति देने से सर्व कार्य संपन्न हो जाते हैं।

कृपया अपने बजट के अनुसार आहुति अवश्य डालें –
आपके पूर्ण सहयोग का आकांशी

अनिल आर्य, 9810117464

स्वामी जी को उस युवक उपदेश देने को कहा। स्वामी जी ने देखा कि उस युवक ने विदेशी वेशभूषा पैण्ट–शर्ट पहन रखी है। इसका उल्लेख कर उन्होंने उस बालक को अपने पूर्वजों की याद दिलाई और बताया कि उनकी वेशभूषा क्या व कैसी होती थी? यह भी बताया कि ज्ञान व चरित्र की दृष्टि से हमारे उन पूर्वजों की संसार में कोई समानता नहीं है। उनके विचारों का उस युवक पर प्रभाव पड़ा और उसने अपना सुधार किया। आज भी हम देखते हैं कि आर्यसमाज के अनुयायी अपने घरों में बच्चों, विशेष कर कन्याओं व स्त्रियों के भारतीय वेशभूषा के पक्षधर है और उनके परिवारों में इस दृष्टि से सख्त निर्देश हैं कि भारतीय वेशभूषा का ही प्रयोग हो। जहां तक अन्य सभी संस्थाओं से तुलना की बात है, आर्यसमाज पहले भी और आज भी भारतीय वेशभूषा का सबसे बड़ा समर्थक व पक्षधर है। आज भी हमारे युवक व युवतियों के गुरुकुलों व शिक्षण संस्थाओं में भारतीय वेशभूषा का ही प्रचलन व प्रभाव है।

किसी जाति व धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी परम्परायें व रीति–रिवाज भी होते हैं जो कि उनकी संस्कृति का अंग कहलाते हैं। भारतीय धर्म व संस्कृति की बात करें तो यहां भी अनेकानेक परम्परायें व रीति–रिवाज प्रचलित हैं जिनके संशोधन व सुधार सहित अनावश्यक का त्याग तथा भूली हुई आवश्यक परम्पराओं का पुनः प्रचलन स्वामी दयानन्द जी व आर्यसमाज ने किया है। स्वामी दयानन्द ने समस्त वैदिक परम्पराओं को पंच महायज्ञों व 16 वैदिक संस्कारों में ढ़ालने सहित भारत में मनायें जाने वाले मुख्य पर्वों होली, दीपावली, शिवरात्रि आदि पर्वों को वैदिक विधि से मनाये जाने का शुभारम्भ किया। वैदिक परम्पराओं में प्रातः व सायं ईश्वरोपासना, दैनिक अग्निहोत्र, माता– पिता– आचार्य–वृद्धों आदि का सम्मान, पशु–पक्षी–कीट–पतंगों आदि को अन्न व भोजन कराना तथा अतिथियों का सत्कार करने सहित गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों को प्रचलित किया। आर्यसमाज अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि का पक्षधर है और सभी मनुष्यों को वेदादि ग्रन्थों सहित सभी प्रकार के ज्ञान की पुस्तकों को नियमित रूप से पढ़ने व पढ़ाने को जीवन का अनिवार्य अंग मानता है। आर्यसमाज वेदादि सभी लाभकारी ग्रन्थों के नियमित स्वाध्याय का प्रबल समर्थक है। वैदिक संस्कृति में अच्छी परम्पराओं का प्रचलन व अनावश्यक एवं बुरी प्रथाओं के नियंत्रण का आर्यसमाज समर्थक है। इस क्षेत्र में आर्यसमाज ने बहुमूल्य योगदान दिया है। आर्यसमाज की प्रत्येक मान्यता व सिद्धान्त सत्य मान्यताओं व तर्कों पर आधारित हैं जिनसे समाज लाभान्वित होता है। इसी कारण सभी लोग अपनी अपनी ज्ञान की योग्यता के अनुसार इसे पसन्द करते व अपनाते हैं। यही कारण है कि आर्यसंमाज भारत तक ही सीमित न होकर एक विश्वव्यापी संगठन है।

मनुष्य का व्यवहार, व्यक्तिगत व सामाजिक नियम तथा विधि–विधान कैसें हों, इसके लिए आर्यसमाज वैदिक परम्पराओं व मनुस्मृति के वेदानुकूल व अप्रक्षिप्त सभी बुद्धिसंगत व देश समाजोपयोगी नियमों को स्वीकार करता है। स्वामी दयानन्द ने ऐसे अधिकांश नियमों का सत्यार्थप्रकाश सहित अपने ग्रन्थों में उल्लेख भी किया है। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म के प्रतीक चोटी, यज्ञोपवीत व सिर पर पगड़ी धारण करने के भी समर्थक हैं। बहुत से लोग आर्यसमाज के एतदविषयक तर्कों से सहमत होने के कारण इनका अनुसरण करते हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा वैदिक धर्म के विश्वासों, नियमों, मान्यताओं व परम्पराओं को सत्य व असत्य की कसौटी पर कस कर निर्धारित किया गया है। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, पुनर्विवाह, विधवा विवाह व इतर कार्यों विषयक नियम, जन्मना जातिवाद, वर्णव्यवस्था, स्त्री शिक्षा आदि विश्वासों को भी सत्य व असत्य की कसौटी तथा न्याय एवं व्यवहारिकता पर कस कर निर्धारित किया गया है जिसका समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। अधिकांश शिक्षित लोग आर्यसमाज की विचारधारा से सहमत हैं। आर्यसमाज ही देश की पहली संस्था है जिसने अंग्रेजों के दमनकारी शासन में स्वदेश भक्ति को उदबुद्ध किया जिसका परिणाम भारत को सन् 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। शहीद पं. स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल व शहीद भगतसिंह जी का परिवार स्वामी दयानन्द व आर्यसमाज के अनुयायी थे। आजादी के आन्दोलन में आर्यसमाज के अनुयायियों की संख्या सर्वाधिक थी ऐसा इतिहास में अंकित है।

स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज वैदिककाल में भारत में प्रचलित प्राचीन व विशुद्ध धर्म एवं संस्कृति के पोषक व पक्षधर थे और इसी को उन्होंने अपने धर्म व संस्कृति प्रचार के आन्दोलन में समाहित किया। इनका समाज पर व्यापक प्रभाव हुआ और आज के वैज्ञानिक युग में इसका भविष्य उज्जवल दृष्टिगोचर होता है। आर्यसमाज के पास संस्कृति से सम्बन्धित संसार की सबसे प्राचीन पुस्तकें चार वेद व महाभारतकाल व उससे पूर्व लिखे गये मनुस्मृति, 6 दर्शन, उपनिषदें, रामायण व महाभारत आदि ग्रन्थ हैं। यह ग्रन्थ न केवल भारतीय वैदिक धर्मियों के लिए ही मान्य हैं अपितु यह सारे संसार के मनुष्यों के धर्म व संस्कृति के आदि व आदर्श स्रोत हैं और सनातन सर्वकल्याणकारी शिक्षाओं के ग्रन्थ हैं। विश्व के सभी मनुष्यों को सभी पूर्वाग्रह छोड़कर वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपने मत–पन्थों की अविद्या से युक्त मान्यताओं व परम्पराओं को संशोधित व सुधार कर अपनाना चाहिये जिससे सर्वहितकारी सर्वमान्य धर्म व संस्कृति के क्षेत्र में एकरूपता आ सके।

युवा शक्ति को आह्वान व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में
डॉ. अमिता व डॉ. अशोक कुमार चौहान के सानिध्य में

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

उद्घाटनः– रविवार 31 मई 2026
प्रातः 11 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक

मुख्य अतिथि– **डॉ. सत्यपाल सिंह जी**
पूर्व पुलिस कमिश्नर एवं पूर्व केन्द्रीय मन्त्री भारत सरकार

समापन समारोह– शनिवार 6 जून 2026
प्रातः 11 से 1.00 बजे तक

मुख्य अतिथि– **डॉ. महेश शर्मा जी**
पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार

स्थानः एमिटी इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 44 नोएडा

आनन्द चौहन	अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	सौरभ गुप्ता
संरक्षक	9810117464	9013 13 7070	98715813 98	9971467978

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 780वां वेबिनार सम्पन्न

परमपिता परमेश्वर से संबंध कैसे बनाएं? विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सुमिरन, समर्पण, नरसेवा, शुक्राना–भाव होने पर प्रभु से बनेंगे सम्बन्ध –विमलेश बंसल

सोमवार, 5 मई 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में परमपिता परमात्मा से संबंध कैसे बनाएं? विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 779 वाँ वेबीनार था। वैदिक विदुषी विमलेश बंसल दर्शनाचार्या ने कहा कि परम अदृश्य सत्ता से जुड़ना किसी गिरजाघर,मस्जिद का मोहताज नहीं है अपितु यह मन का रिश्ता है। कुछ सरल रास्ते–1. सुमिरन = याद, हर पल मन से उनका नाम लो।काम करते हुए भी ष्प्रभुष् कह दो। जैसे माँ को बच्चा याद करता है, वैसे। 2. समर्पण = सौंप देना, जो भी सुख–दुख आए,कहो तेरी मर्जी। बोझ हल्का हो जाता है। अहम हटते ही वो पास लगते हैं। 3. सेवा = प्रेम का रूप, नर में नारायण देखो। भूखे को खाना, दुखी को सहारा = सीधे उनसे जुड़ना है। 4. मौन = सुनना रोज 5 मिनट चुप बैठो।सांस पर ध्यान दो।उस शांति में उनकी आवाज सुनाई देती है। 5. शुक्राना = धन्यवाद सुबह उठते ही 3 चीजों के लिए शुक्र है बोलो।जल,सांस,घर।कृतज्ञता ही सबसे बड़ा पुल है। 'भाव' अहम छोड़ दो,प्रेम से याद करो,सब में उन्हीं को देखो। रिश्ता खुद–ब–खुद बन जाएगा।वो तो हर पल पास ही हैं,बस हमने पीठ की है। मुख्य अतिथि डॉ. कल्पना रस्तोगी व अध्यक्ष कुसुम भण्डारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा,जनक अरोड़ा, पिंकी आर्या, कमला हंस, संतोष धर, सुधीर बंसल आदि के मधुर भजन हुए।

उपनिषदों में प्रश्नोत्तर विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन

उपनिषदों में है वैश्विक समस्याओं का समाधान –डॉ. रामचन्द्र (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)

सोमवार 11 मई 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्त्वावधान में उपनिषदों में प्रश्नोत्तर विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया ष्यह करोना काल से 780 वा वेबीनार था। वैदिक प्रवक्ता डॉ. राम चन्द्र (विभागाध्यक्ष संस्कृत कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने कहा कि भारत की ज्ञान परम्परा वेद से प्रारंभ होकर उपनिषदों तक की एक महान विश्व यात्रा की तरह है। भारत के ऋषियों ने अरण्य में एकांत साधना के द्वारा प्रकृति जीव एवं परमात्मा के जिन सूक्ष्म रहस्यों को आत्मसात किया उन्हें उपनिषदों के माध्यम से प्रकट किया गया है। गत हजारों वर्षों से उपनिषदों के ज्ञान ने पूरी मानवता को आलोकित किया है। उपनिषदों के अध्ययन से सृष्टि के रहस्य स्पष्ट होते हैं और जीवन की सभी समस्याओं के समाधान भी प्राप्त होते हैं। उनके अध्ययन से संपूर्ण ब्रह्मांड आपके किसी एक विशेष ध्येय के लिए साधन बन जाता है और आप स्वयं में कृतकृत्यता की अनुभूति करते हैं। व्यक्ति के लिए संसार की प्रत्येक वस्तु ब्रह्म से अनुप्राणित हो जाती है और वह सांसारिक क्लेश एवं तनाव से मुक्त होकर अत्यंत सहजतापूर्वक जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है। डॉ. रामचन्द्र ने कहा कि उपनिषदों की संख्या 100 से भी अधिक है पर उनमें 11 उपनिषदें प्रमुख मन जाती हैं– ईश, केन,कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक एवं श्वेताश्वतर। उपनिषदों की भाषा बहुत ही सरल एवं प्रभावी है। जीवन के रहस्य को इनमें प्रश्न उत्तर के माध्यम से समझाया गया है। कठोपनिषद् में नचिकेता एवं यमाचार्य के संवाद से जीवन के उद्देश्य एवं मृत्यु के बाद की स्थिति को स्पष्ट करते हुए ओम् की साधना को सबसे ज्यादा महत्व दिया गया है। प्रश्नोपनिषद् में महर्षि पिप्पलाद के साथ छरू ऋषियों ने संवाद करके अनेक रहस्य पूर्ण प्रश्नों के समाधान प्राप्त किये हैं। मुण्डकोपनिषद् में शौनक एवं आंगिरस के संवाद से परा एवं अपरा विद्या के सूक्ष्म रहस्यों को उद्घाटित किया गया है। मांडूक्य उपनिषद् वेदांत के मूल सिद्धांत को स्पष्ट करता है। ऐतरेय एवं तैत्तिरीय में पंच महाकोश एवं जन्म प्रक्रिया से संबंधित प्रश्नों पर गंभीर विचार हुआ है। मुख्य वक्ता ने कहा कि छान्दोग्य एवं बृहदारण्यक आकार की दृष्टि से सबसे बड़े हैं। इन दोनों में भारतीय ज्ञान परंपरा के इतिहास के अनेक मूल संदर्भ भरे पड़े हैं। नारद सनत्कुमार, जनक याज्ञवल्क्य एवं मैत्रेयी गार्गी के प्रसंग हमें प्रकृति के गंभीर स्वरूप के साथ–साथ सृष्टि प्रक्रिया के सूक्ष्म रहस्यों से भी परिचित कराते हैं। वर्तमान समय में संसार जिस प्रकार की विकराल समस्याओं से घिरा हुआ है और मनुष्य का वैचारिक धरातल क्षीण हो रहा है उस समय में उपनिषदों का अध्ययन इन समस्याओं के समाधान में सबसे महत्वपूर्ण प्रकाश स्तंभ सिद्ध हो सकता है।

मुख्य अतिथि डॉ. गजराज सिंह आर्य व अध्यक्ष कृष्ण कुमार यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970